॥ ओउम् ॥

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० २८

सत्यार्थ प्रकाश की छीछालेदड़ का उत्तर-

लेखक

(खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला के समस्त ग्रन्थों के यशस्वी प्रणेता)

आचार्य डा० श्रीराम आर्य

कासगंज [उ० प्र०]

प्रकाशक

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (उत्तर-प्रदेश) भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १६०

चौथीबार] आर्य संवत् १९७२९४९०८५ [मूल्य २ रुपये

सन् १९८५ ई०

॥ ओ३म् ॥

एक व्यक्ति ने 'सत्यार्थ प्रकाश की छीछालेदड़' नाम का एक ट्रैक्ट हमको लाकर दिया है। इस ट्रैक्ट के टाइटिल पेज पर प्रथम पंक्ति में लिखा है। 'ब्रह्माण्ड भर के दयानन्दियों से कुछ प्रश्न पहिली किश्त)"। इस ट्रैक्ट में कुल ३८ प्रश्न किये हैं। यद्यपि प्रश्न ब्रह्माण्ड भर के दयानन्दियों से है। परन्तु उत्तर प्रश्न कर्ता ने हमसे मांगा है। प्रश्न-कर्ता हैं मि० प्रेमाचार्य शास्त्री जो अपने को 'शास्त्रार्थ पंचानन लिखते हैं। यह नौजवान दिल्ली की प्रसिद्ध गाली गलौज बकने वाली पौरा-णिक पंडित मण्डली माधवाचार्य प्रेमाचार्य बोराचार्य एण्ड कम्पनी के संदस्य हैं ध० मि० माधवाचार्य के कुल कलंकी पुत्र हैं। इनके सारे ही प्रश्न असभ्यता पूर्ण तथा सारहीन हैं। क्योंकि इस प्रकार के क्षुद्र ट्रैक्टों से जनता में हमारे तथा आर्य समाज के प्रति भ्रम फैल सकता है। अतः विपक्षी के योग्य भाषा में 'शठे-शाठ्ये समाचरेत' की नीति के अनुसार हम उनका गर्व मर्दन करते हुये उनके प्रश्नों को इस किश्त को मय ब्याज के उन को चुका रहे हैं। आशा है उनका तथा उनके पक्ष वालों का उचित समाधान हो जावेगा और वह सभ्यता से प्रश्न करना भी सीख लेंगे।

यहां हम थोड़ा सा प्रकाश विपक्षी प्रेमाचार्य की असलियत पर भी डाल दें तो अनुचित नहीं होगा क्योंकि ये पिता पुत्र हमको व ऋषि दयानन्द जी महाराज को गालियाँ बहुत दिया करते हैं। बिपक्षी अपने को 'पंचानन' लिखते हैं। कोष में पंचानन का अर्थ है 'महादेव जी'। अर्थात् पार्वती के पति विपक्षी अपने को बताते हैं अथवा बनाना चाहते हैं। विपक्षी के यहां से प्रकाशित शास्त्रार्थ महारथी अंक में खंड २ पृ० १६ पंक्ति १४ में लिखा है कि 'पार्वती' विपक्षी की माँ थी अर्थात् विपक्षी

सर झुकाता है। वह इस सत्य को जानता है कि दयानन्द के भक्त इस पृथ्वी पर ही नहीं हैं वरन् जितने भी आकाश में लोक लोकान्तर तारागण ग्रह उपग्रह आदि दीखते हैं व अदृश्य हैं उन सभी में दयानन्दी आर्य समाजी बसते हैं। ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व आ जाता है। विपक्षी उन सभी से प्रश्न कर रहा है। उसे यह देखकर बड़ा दुःख होता है कि उसका सनातन धर्म इस छोटी सी पृथ्वी के चन्द ज्ञान हीन मनुष्यों का पंथ रह गया है और उस पर भी अधिकांश लोग विश्वास नहीं करते हैं। आर्य समाज के प्रेमियों के लिये यह गौरव की बात है, कि उनके प्रभाव व विस्तार को विपक्षी लोग भी अब 'ब्रह्माण्ड व्यापी' नतमस्तक होकर मानने लगे हैं। साथ ही ब्रह्माण्ड भर के आर्य समाजियों की ओर से उत्तर देने के लिये विपक्षी हमको प्रतिनिधि मान कर हमसे ही अपने प्रश्नों का जबाब मांग रहा है। हम उसका (रावण मेघनाद के रूप में) यथोचित पूर्ववत् सत्कार करने को समुद्यत हैं। विपक्षी अपनी जाली किस्त का मय सूद के उत्तर अब चुकता स्वीकार करे।

यहाँ हम विपक्षी से पूछना चाहते हैं कि हमारे 'संसार के पौराणिक 'विद्वानों से ३१ प्रश्न तथा 'अवतारवाद पर ३१ प्रश्न' 'मूर्ति पूजा' पर ३१ प्रश्न-गीता पर ४२ प्रश्न, मृतक श्राद्ध पर २१ प्रश्न इस प्रकार १५६ प्रश्न तुम सहित सारे संसार के पौराणिकों की खोपड़ी पर गत १७, १८ वर्षों से सवार हैं जिनका उत्तर संसार का कोई भी सनातनी पंडित नहीं दे सका है। तो जब तक तुम हमारी दोनों किस्तों को न उतार लो, तुमको हम से सवाल करने का हक क्या है? हमारी पांच दर्जन से भी अधिक पुस्तकें अब तक तुम्हारे मिथ्या सम्प्रदायों के खंडन में छप चुकी हैं। तुम्हारी मंडली से एक का भी जवाब आज तक नहीं बन सका है, यह संसार जानता है। तुम और तुम्हारे पिता जी तो हमारे पुराने कर्जदार हो। पहले हमारा कर्जा चुकाने की कोशिश करो।

और यदि नहीं चुका सकते हो तो हमसे लिखित माफी मांग कर अपने को देवालिया घोषित करदो। बरना बाद मियाद के हम नालिश करके तुम्हारी सारी जायदाद कुर्क कराकर तुमको मण्डली सहित सरे बाजार नीलाम पर चढ़ाकर तुमसे अपनी किश्तों का जवाब तलब करेंगे।

अगर तुम अपनी पैत्रिक बदतमीजी से पेश आओगे तो हम पुराणों के डन्डों से तुम्हारा दिमाग दुरुस्त कर देंगे। जैसा कि सदैव संडातियों का हम किया करते हैं। तुम लोग तो हम आर्यों के कदीमी कर्जदार हो। तुम्हारी औकात क्या है जो बढ़-बढ़ कर बातें करते हो। इस बार तो हम तुमको नादान समझ कर क्षमा करते हैं। और तुम्हारे जाली प्रश्नों का जवाब दिये देते हैं, पर आगे ऐसी गलती न करना।

हम हैं—
(तुम्हारे परमपूज्य)
(आचार्य) डा० श्रीराम आर्य

कासगंज (उ० प्र०)
ता० १–१–६७

विपक्षी के प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न १—सत्यार्थ प्रकाश के आवरण पृष्ठ पर जो आर्यवत्सर छपा है वह कौन वेद मन्त्र के अनुकूल है? जिन पुराणों को तुम नित्य कोसते हो उनमें जिसे ओतत्सदद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे आदि पौराणिक प्रमाण से ही आर्यवत्सर निकालना तुम्हारे लिये डूब मरने की बात है ?

उत्तर—इस पृथ्वी की कुल आयु वेद के 'शतं ते युतं हायनान द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः । इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यताम हृणीयमानः । अथर्व ८/२/२१ ॥

मन्त्रानुसार कुल चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष की है। इसमें सृष्टि के प्रारंभ काल से जितने वर्ष बीतते जाते हैं, वही आर्यों का सृष्टि सम्वत् प्रारम्भ से १/१ वर्ष आगे बढ़ता जाता है इस प्रकार अब तक सृष्टि की आयु की १९७२९४९ ६६ वीं वर्ष चल रही है। यही वैदिक सम्वत् है। इसकी गणना सरलता से सब कोई याद रख सके इसलिये गणित के ज्योतिषकारों ने सम्वत्, चतुर्युगी तथा युगों का विभाग करके एक सूत्र रूप में 'ओंतत्सत्' आदि का छोटा सा रूप बना दिया है जिसे सब पौराणिक पंडित लोग ग्राहकों को ठगते समय संकल्प के रूप में भी बोला करते हैं। यह कोई पौराणिक प्रकार नहीं है जिस पर आप जैसे ठगों का ठेका हो यदि इसी को किसी पुराणकार ने भी अपने पुराण में लिख लिया हो तो यह पुराण की सम्पति नहीं बन सकता है। यह तो इतना प्राचीन है जितनी कि सृष्टि की आयु है। यथा समय इसमें परिवर्तन किया जाता रहा है और आगे होता रहेगा। ताकि यह समयानुकूल बना रहे। इसको बनाने वाला किसी भी पौराणिक को आप त्रिकाल में भी सिद्ध नहीं कर सकते हैं। आपका प्रश्न व्यर्थ है।

प्रश्न २ स० प्र० प्रथम पृष्ठ पर जो ओ३म् (ओ+३का अंक और म) लिखा है यह कौन वेद के अनुकूल है। उपनिषद तो 'ॐ' कार बिन्दु संयुक्तम्' प्रमाणानुसार बिन्दु संयुक्त ॐकार का ध्यान करना बताते हैं?

उत्तर—ॐ यह ओ३म् का पौराणिक प्रतीक है। ऊ अक्षर की पूंछ को ऊपर को मोड़कर नकार की बिन्दी रख देने से जो उच्चारण बनेगा वह ऊँ बनेगा, न

कि ओम् बनेगा। ओम् शब्द अ+उ+म् इन तीन अक्षरों से ही बनता है। अ+उ मिल कर ओ बनता है और अन्त में म मिलाने पर 'ओम् बनता है। किन्तु वेद में अष्टाध्यायी के नियमानुसार प्लुत होकर ओ३म् शब्द सिद्ध होता है, तो जो वेद में शुद्ध है वह सर्वत्र ही शुद्ध होगा। इसीलिए जब भी उच्चारण किया जाता है तो ओ को दीर्घ स्वर से बोलने पर अन्त में म् जोड़ने से ओ३म् ही बोला जाता है जल्दी से बोलना हो तो ओम् कह देते हैं। अतः ओ३म् शब्द इसी रूप में बोला जाता है। यह सर्वत्र सर्वथा शुद्ध है और वैसा ही लिखा जाना चाहिये। सत्यार्थ प्रकाश. तो सत्य का प्रकाशक ग्रन्थ है उसमें यह ओ३म् का स्वरूप ठीक है। तुम्हारे परम मान्य यजुर्वेद के महीधर उव्वट भाष्य वाले संस्करण में भी अ० ४० मंत्र १५ व १७ में ओ३म' इसी रूप में छपता है देख लो।

तुमको जब कुछ आता जाता नहीं है तब प्रश्न करने का उन्माद क्यों सवार हो गया है ओ३म् जिसका वाची है उस परमेश्वर का ध्यान किया जाता है न कि ॐ ओम् या ओ३म अक्षरों का शब्दों की आकृतियों का। शब्द तो किसी भी भाषा में किसी भी लिपि में लिखे जा सकते हैं। उनकी शक्लों का ध्यान नहीं होता है बल्कि नाम वाली सत्ता का ध्यान होता है। इसी प्रकार ओ३म वाली ब्रह्म की सत्ता का ध्यान होता है। तुमको तो इतनी भी जानकारी नहीं है। तुम्हें शास्त्री किसने बना दिया, या डिग्री कहीं से दो चार रुपये में मोल तो नहीं खरीद ली है जैसी कि अनेक पौराणिक लगाये फिरते हैं। 'ओंकार विन्दु संयुक्त' का आपका प्रमाण पौराणिक होने से हमको मान्य नहीं है आपको पूरा श्लोक तथा पता भी उसका साथ में लिखना चाहिये था। पूंछ व बिन्दी वाले ॐ को आप सात जन्म में भी वैदिक साबित नहीं कर सकते हैं।

प्रश्न ३-स० प्र० की भूमिका पृ० १ पर लिखा है कि 'द्वितीया-वृति में कहीं-कहीं शब्द, वाक्य रचना का भेद हुआ है परन्तु अर्थ भेद नहीं किया गया है' यह स्वामी का महा झूठ है क्योंकि प्रथमावृति में वन्ध्या गाय का वध, मांस, हवन और मृतक श्राद्ध आदि अनेक विषय थे जो द्वितीयावृति में निकाल दिये गये हैं। तथा प्रथमावृति में ११

समुल्लास..... थे और द्वितीयावृत्ति में १४ समुल्लास ......आदि हैं। क्या इतने पर भी अर्थ का भेद नहीं हुआ?

उत्तर—पौराणिक मत में विष्णु पुराण अंक ३ अ० १६ में मृतक श्राद्ध में गाय को मारकर हवन करना और पौराणिक पंडितों को खिलाना आदि का विधान आज भी दिया है। स्वामीजी के नौकर भीमसेन आदि प्रच्छन्न पौराणिक लोगों ने जिन पर सत्यार्थ प्रकाश का प्रूफ शोधन आदि का कार्य भार था उन्होंने प्रेस कापी में अपनी ओर से हाशिये पर मृतक श्राद्ध आदि की मूर्खता पूर्ण पौराणिक मान्य बातें घुसेड़ कर छपा दी थीं। स्वामी जी प्रचार में रहते थे जब उनको पता लगा तो उन्होंने प्रथम संस्करण को अमान्य घोषित करके संशोधित द्वितीय संस्करण छपने दिया था। इन प्रक्षिप्त अंशों के अतिरिक्त शेष सत्यार्थ प्रकाश के दोनों संस्करणों में पद या वाक्य रचना भेद तो है पर तथ्यों में कोई भेद नहीं हैं। प्रथम संस्करण छपने तक ११ समुल्लास ही तैयार हो पाये थे किन्तु द्वितीय छपने के समय जैनियों पर १२ वां, ईसाइयों पर १३ वां तथा मुसलमानों पर १४ वां ये तीन समुल्लास और तैयार हो गये थे। अतः उसमें छपा दिये गये थे।

इस सबमें गलत क्या है, यह विपक्षी नहीं बता सका है। आखिर जो कुछ भी लिखा है वह सत्य तो है ही और यह तुम भी मानते हो। अथवा ईसाई व इस्लाम का खण्डन देखकर दिल में तुम्हारे दर्द होता हो तो स्पष्ट कारण सहित बताओ कि क्यों होता है। रहा गो मांस की बात वह तो कात्यायन स्मृति तथा विष्णु आदि पुराणों के अनुसार आप लोगों का परम भोजन है ही। उस पर आप का ऐतराज करने का हक नहीं है। हम आर्य लोग आप से इसीलिए घृणा करते हैं कि आप लोग पौराणिक मतानुसार गो मांस भक्षण को अवैध नहीं मानते हैं और खाते खिलाते हो।

सं० प्र० की दोनों आवृत्तियों में जब समुल्लासों का अन्तर हो गया तो शब्द मात्रा वाक्यों का अन्तर स्वाभाविक ही था। पर इसमें अवैदिक क्या हुआ यह आप नहीं बता सके हैं, अतः प्रश्न गलत रहा है।

प्रश्न ४—स० प्र० भू० पृ० ४ में स्वामी ने श्री मद्भगवद्गीता का 'यत्त-

दग्ध्रे विषमिव' आदि प्रमाण उद्धृत करके अपने पक्ष की पुष्टि की है, परन्तु कासगंजी गीता का खण्डन करता है-दोनों में कौन सच्चा है ? दोनों झूठे हैं।

उत्तर–गीताकार ने बड़ी चतुराई से उपनिषद-नीति ग्रन्थ, महाभारत आदि के अनेक उत्तम वाक्यों का संग्रह करके उनसे पाठकों को प्रभावित करके पीछे से हर स्थल पर कृष्ण को साक्षात परमात्मा बनाने का जाल रचा है। तो यदि गीता ने स्वयं उधार लिये वाक्यों में से किसी नीति के वाक्य को स्वामी जी ने उद्धृत कर दिया तब उससे सारी गीता कोई प्रमाणिक पुस्तक नहीं बन जाती है। यदि कुरान की कोई अच्छी बात उद्धृत करदी जावे तो सारा कुरान सनातनियों की पूज्य पुस्तक व सत्य ग्रन्थ बन जावेगा ? क्या आप उसे वैसा मान लेंगे ?

हमने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'गीता विवेचन' में गीता के सिद्धान्तों का सारा पोलखाता खोल कर रख दिया है, जिसे पढ़ कर अब सनातनी विद्वान भी गीता को मान्य पुस्तक नहीं मानने लगे हैं। तुम बिचारे किस गिनती में हो, 'पिद्दी न पिद्दी का शोरुआ' हमारी 'गीता विवेचन' पुस्तक का उत्तर भारत का कोई भी पौराणिक दे ही नहीं सकता है। वह सर्वथा सत्य पुस्तक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने कभी गीता को मान्यता नहीं दी थी। अतः उनका और हमारा दोनों का पक्ष सत्य है कि गीता मिथ्या पुस्तक है। न अर्जुन को कभी विषाद हुआ था और न श्रीकृष्ण जी ने किसी गीता का उपदेश उसे दिया था यह गीता तो किसी वैष्णव कृष्ण पन्थी ने बाद को गढ़कर महाभारत में घुसेड़ दी है, अतः जाली ग्रन्थ है।

प्रश्न ९–सं० प्र० भूमिका पृ० ४ पर लिखा है 'मैं दयानन्द आर्यावर्त में पैदा हुआ हूँ' सफेद झूठ। आर्यावर्त तो हिमाचल और विन्ध्याचल पर्वतों की मध्य भूमिका नाम मन्त्रादि स्मृतियों से सिद्ध है। स्वामी जी पैदा हुए गुजरात में हरिभजन कापड़ी की करी कराई औरत के पेटसे।

उत्तर–विपक्षी अव्वल नम्बर के धूर्त हैं। उसे महर्षि के पावन व्यक्तित्व को बलात् कलंकित करने की धुन सवार है। उसे आर्यावर्त की सीमा का भी

परिज्ञान नहीं है इसने बाल्मीकि रामायण तक भी नहीं पढ़ी है जिसमें
विन्ध्याचल की स्थिति दक्षिणी भारत के दोनों ओर के समुद्र तटीय पर्वत माला
तक मानी है न कि उत्तर प्रदेश के विन्ध्याचल की सीमा को। देखो प्रमाण—

कन्दरोदभिनिष्क्रम्य स विन्ध्यस्य महागिरे ॥ वा० रा० किष्किन्धा कां०
सर्ग ५६/३॥

दक्षिणस्योदधेः तीरे विन्ध्योऽयमिति निश्चितः ॥ सर्ग ६०/७॥

जटायु का भाई सम्पाति विन्ध्य पर्वत की कन्दरा में से निकल हनूमान से
बोला दक्षिण समुद्र के किनारे का यह निश्चित रूप से विन्ध्य पर्वत है।

इसका अर्थ हुआ कि हिमालय से लेकर भारत के दूरस्थ दक्षिण प्रांत तक
का सारा प्रदेश (सम्पूर्ण भारतवर्ष) ही आर्यावर्त हैं। अतः ऋषि का यह
लिखना कि मैं आर्यावर्त में पैदा हुआ हूँ, सर्वथा सत्य है।

महर्षि के पूज्य पिताजी का नाम कर्षनजी तिबारी था तथा पितामह का
नाम लालजी तिबारी था। वे औदीच्य ब्राह्मण थे यह इतिहास से प्रमाणित हो
चुका है। तुम तो सभी को अपना जैसा ही समझते हो। तुम्हारे पिताजी
माधवाचार्यजी ने परवतिया कर ली थी और उससे नियोग करवा कर तुम
जैसी कपूती कुलकलंकी औलादें पैदा करा ली हैं। अब तुम स्वयं किसी कञ्जर
से गड़बड़ी पैदायशी होने से संसार को अपने ही समान समझते हो, यह
तुम्हारी सरासर मूर्खता है। यदि तुम किसी उच्च वर्ण के पिता के बीर्य से या
कुलीन माता की कोख से पैदा हुए होते तो महर्षि दयानन्द के परम पावन
व्यक्तित्व पर कीचड़ उछालने का साहस नहीं करते और न हमको गालियां
देते। मिस्टर! यह तो नुत्फे का दोष है, तुम बिचारे क्या करो। मजबूर हो
पैत्रिक स्वभाव से। एक बात बताओ। तुम्हारे पिताजी माधव जी ने कई
घराने किये थे, तो तुम उनकी कौन सी नम्बर की बीबी से पैदा हुये थे ?

प्रश्न ६—आर्यसमाज जोधपुर द्वारा प्रकाशित 'मांस भोजन बिचार' नामक पुस्तक में वेद मंत्रों से पकाना और खाना लिखा है वह सब दयानन्दियों का मान्य ग्रन्थ है न ?

उत्तर—आर्यसमाज मांस को पौराणिकों और राक्षसों का भोज मानता है, वैदिक

नहीं, यह संसार जानता है। यदि किसी पौराणिक ने किसी आर्यसमाज के नाम से आर्यसमाज को बदनाम कराने के लिये कई किताब ऐसी छपा भी दी हो तो वह वेद व ऋषि के आदेश के विरुद्ध होने से हमको अमान्य है। ऋषि ने गोकरुणा निधि' आदि पुस्तकों में मांसाहार का निषेध किया है सत्यार्थ प्रकाश में मांस भोजन का निषेध स्पष्ट है। परन्तु आप बतावें कि शराब पीना, रज वीर्य चाटना, पुरुष की उपस्थेन्द्रिय चाटना, अजामेध, गोमेध (कात्यायन स्मृति) लम्बे कान वाला बकरा, गैंडा, मछली, नीलगाय, हिरन, कछुआ आदि खाना (मनुस्मृति) यह आपका सनातन धर्म किस प्रमाण से मानता है। रज वीर्य पीना आपके मान्य शास्त्र कुलार्णव तन्त्र में लिखा है। असवर्णा पत्नी को वीर्य पिलाना भागवत पुराण में लिखा है। श्रीकृष्ण जी को शराबी तुम्हारे गन्दे भविष्य पुराण में बताया है। ये सारे पापाचार अपने मत में किस प्रमाण से तुम लोग मानते व अमल में लाते हो तुमको हम पर झूठे आक्षेप करने में शर्म भी क्यों नहीं आती है? इतने बेहया क्यों बन गये हो?

प्रश्न ७-स० प्र० पृ० १ में लिखा है 'सच्चिदानंदेश्वराय नमोनमः' यह मंगलाचरण किसी भी प्राचीन वेदशास्त्र ग्रंथ में नहीं लिखा है, अतः यह न केवल अवैदिक अपितु अर्वाचीन भी है।

उत्तर—यदि आपको 'सच्चिदानंदेश्वराय नमो नमः' वाक्य किसी भी वेद शास्त्र में नहीं मिला तो इसमें अवैदिकता क्या आपको नजर आई, यह नहीं बताया गया किसी वेद मंत्र से इसका विरोध दिखाना था यदि अवैदिक सिद्ध करना था। वह आप नहीं कर सके। इसमें गलत क्या है यह भी नहीं बता सके हैं। परमात्मा सत्+चित+आनन्द स्वरूप तो है ही उसे तो आप भी मानते हैं और यह उसका नाम भी है। तब उसके गुण कर्म स्वभावानुरूप किसी भी नाम से उसे नमस्कार किया जा सकता है। यह अर्वाचीन हो या प्राचीन, पर अवैदिक नहीं है अतः उचित है। वेद के विरुद्ध प्रमाणित न होने से यह वेदानुकूल स्वयं सिद्ध हो जाता है। आपको तो प्रश्न करने की भी तमीज नहीं है। व्यर्थ ही अपने आपको शास्त्रार्थ दशानन बताकर कलंकित

करते हो और अपने सुयोग्य पिता श्री माधवाचार्यजी का नाम बदनाम करते हो। तुम तो उनकी कपूती औलाद निकले इससे तो तुम्हारी जगह उनके कोई प्रेमवती नाम की कन्या पैदा होती तो किसी आर्यसमाजी नौजवान का घर तो भी बसाती।

एक बात बताओ, तुम जो पारवती के मैल के पुतले महा अछूत गणेश के सर पर हाथी की कलम लगाकर एक बिचित्र पहाड़ी जन्तु को 'श्री गणेशायनमः' लिखते हो वह किस वेद शास्त्र उपनिषद व्याकरण आदि के अनुकूल है और कैसे ?

प्रश्न ८—स० प्र० में विभागों का नाम समुल्लास लिखा है ..... यह निरर्थक है ...... समुल्लास शब्द विलास का समकक्ष है जो स्त्रियों के हाव भाव नखरों का वाचक है ... ।

उत्तर—विपक्षी की मूर्खता उसके प्रश्न से प्रगट है। उल्लास शब्द का अर्थ कोष में हर्ष, आनन्द अध्याय परिच्छेद आदि दिये हैं सम् का अथ है अच्छी तरह से सुन्दरता से शुद्ध-बराबर आदि। इस प्रकार समुल्लास का अर्थ हुआ उत्तम सुन्दर अध्याय।

विपक्षी को हिन्दी भी तो नहीं आती है और बना फिरता है शास्त्री। इस बुद्धि के हिमालय को सर्वत्र स्वप्न में भी दिल्ली के काठ बाजार की रन्डियों के हाव भाव विलास के ख्वाब आया करते हैं। जिनके चक्कर में इसने अपनी सारी जवानी बर्बाद की है।

प्रश्न ९ स० प्र० में लिखा है कि जो आदि मध्य और अन्त में मंगल करेगा तो उस ग्रन्थ के बीच में जो कुछ लेख होगा वह अमंगल ही रहेगा स्वामी जी नें स्वयं आदि और अन्त मे ओं शन्नो मित्रः आदि मंगलाचरण किया है इससे स० प्र० के बीच में जो कुछ लिखा है सो अमंगल ही हुआ न ?

उत्तर—मंगल आचरण का अर्थ है सत्याचरण करना स्वामीजी का लेख है 'ग्रंथ के प्रारभ से लेकर समाप्ति पर्यन्त सत्याचार करना ही मंगल आचरण है न कि कहीं मंगल और कहीं अमंगल लिखना'। स्वामीजी के सम्पूर्ण ग्रन्थ में सत्य का ही आचरण है। पौराणिक ग्रन्थों में आदि मध्य तथा अन्त में कहीं २

मंगल आचरण दीख पड़ता है जोकि जनता को धोखा देने को होता है शेष सारे ग्रन्थ में पाखण्ड भरा होता है अतः स्वामी जी का लेख सत्य है। शन्नो मित्रः' मंत्र से ईश्वर प्रार्थना की गई है नकि ग्रन्थ के विषय में सत्याचरण से उसका कोई सम्बन्ध है। क्या विपक्षी परमात्मा की प्रार्थना को मिथ्याचरण मानता है।

प्रश्न १०—स० प्र० पृ० १ का 'शन्नो मित्रः' आदि का पूरा मंगलाचरण चारों संहिताओं में दिखाओ। नहीं तो केवल चार संहिताओं के वेद होने का दुराग्रह छोड़ो ......।

उत्तर—शन्नोमित्रः मंत्र तैत्तिरीयोपनिषिद्ध शिक्षावल्ली प्रथम अनुवाक का प्रथम मंत्र है उपनिषकार ऋषि ने परमेश्वर की प्रार्थना उक्त मंत्र द्वारा की है। महर्षिदयानन्द जी महाराज को एकादश उपनिषदें मान्य थी। उक्त उपनिषद भी उनमें से एक है। अतः ऋषिवर ने उपनिषत्कार ऋषि की प्रार्थना के सुन्दर मंत्र के द्वारा ही परमेश्वर की प्रार्थना की है। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में उक्त मंत्र को वेद मंत्र कहीं नहीं बताया है। तब विपक्षी का हमसे उसे वेद संहिताओं में दिखावे को कहना कोई मानी नहीं रखता है। प्रश्न करने से पहले उसे प्रश्न करने की तमीज होनी चाहिये।

प्रश्न ११—उपर्युक्त मंत्र में त्वमेव प्रत्क्षं ब्रह्मासि वाक्य विद्यमान है जिसका अर्थ है 'तू ही प्रत्यक्ष ब्रह्म है'। जबकि ब्रह्म प्रत्यक्ष=नेत्रों का विषय है फिर तुम उसे केवल निराकार क्यों कहते हो ?

उत्तर—कार्यजगत को देखकर उसके ज्ञानवान सर्वव्यापक कर्ता परमेश्वर का अनुमानपूर्वक प्रत्यक्ष प्रत्येक उस व्यक्ति को हो जाता है जिसके ज्ञान नेत्र खुल जाते हैं। पर जिन पौराणिकों के भीतर व बाहर के दोनों नेत्र फूटे होते हैं उनको कुछ भी समझ में नहीं आता है। ध्यानावस्थित व्यक्ति परमेश्वर को अपने अन्दर अपने ज्ञान नेत्र से आत्मा में अनुभव करके कहता है कि परमेश्वर! तुम ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हो'। इसमें कोई आक्षेप परमेश्वर के निराकारत्व पर नहीं बनता है। प्रश्न कर्ता अज्ञानी है, उसका प्रश्न निराधार है।

प्रश्न १२—सं पं० पृ० ३ पर लिखा है कि सब्रह्मा सविष्णु सरुद्रः

अर्थात् वही परमात्मा ब्रह्मा, विष्णु, और रुद्र है। जब तुम त्रिवेदों की निन्दा करते हो तब ईश्वर की ही निन्दा करते हो न ?

उत्तर—सत्यार्थप्रकाश में एक ही सर्वव्यापक ब्रह्म के सौ नाम गिनाये हैं। ये नाम भी उसी एक परमेश्वर के हैं। परन्तु पुराणों में लम्बी दाढ़ी वाला निज पुत्रीगामी चार मुँह वाला ब्रह्मा था जिसकी खोपड़ी पर गधे का सर भी था। चार हाथों वाला, सर्प पर सोने वाला, लक्ष्मी देवी नाम की स्त्री का पति, सती तुलसी व वृन्दा का छल से व्यभिचार करके सतीत्व नष्ट करने वाला (शिवपुराण) तथापि पर नारीणां लम्पटो नित्यमेव हि' (धर्म संहित १।१०) के अनुसार पर नारियों का लम्पट, अवतार लेकर 'चोर जार शिखामणि' (गोपाल सहस्र नाम ११७) के अनुसार चोर और व्यभिचारियों में शिरोमणि ऐसा व्यक्ति विष्णु था सर पर जटा जूट धारण करने वाला, पारवती तथा सती का पति, त्रिशूल धारी, महानन्दा वेश्या से वेश्यागमन (शिवपुराण) तथा दैत्य पुत्र आदि से अप्राकृतिक व्यभिचार करने वाला (मत्स्यपुराण) कैलाश पर्वत वासी शिवजी था। ये तीनों व्यक्ति ब्रह्मा, विष्णु व महादेव पुराणों के अनुसार बड़े अत्याचारी थे। इन तीनों ने मिलकर अत्रिऋषि की सती साध्वी पत्नी अनुसूया को जबर्दस्ती पकड़कर बलात् व्यभिचार की भी चेष्टा की थी (भविष्य पुराण)। पुराणों में ये तीनों महापति देवता परमात्मा से भिन्न बताये गये हैं। इनके चरित्रों की अश्लील कथाओं से पुराण भरे पड़े हैं। हम उन पुराणोक्त कथाओं को जनता को दिखाते हैं तो क्या पाप करते हैं। तुम इन कूड़ापन्थी पुराणों को समुद्र में जल प्रवह क्यों नहीं कर देते हो हमारा तुम्हारा झगड़ा ही खतम हो जावे। हमने ईश्वर की निन्दा कभी की है। तुम्हारे फर्जी देवताओं की वास्तविकता का पर्दा फाश किया है।

पुराणकार तुम्हारे सवाल का जवाब देता हुआ तुम्हारे कान खींचता है और बताता है—

> विष्णु ब्रह्मादि रूपाण मैक्य जानीन्ते ये मानवः।
> तेयान्ति नरकं घोरं पुनरावृत्ति वर्जितम्। (गरुड़ पु०)

भावार्थ—विष्णु, ब्रह्मा, शिव को स्वरूप से जो पौराणिक लोग एक बताते

व जानते हैं, उन दुष्टों को घोर नरक मिलता है और फिर कभी उनका पुनर्जन्म भी नहीं होता है।

तुम पौराणिक होकर त्रिदेवों को एक कैसे मान सकते हो ? सोचो और समझो।

प्रश्न १३ सं० प्र पृ ४ में लिखा है कि परमात्मा का नाम 'ओ३म्' है अन्य सब गौण नाम हैं। गौण शब्द का अर्थ है, गुण सम्बन्धी। स्वामी जी इसी सन्दर्भ में ओ३म् का अर्थ अवनीति 'ओ३म्' रक्षा करने से ओ३म् ऐसा लिखा है। सो रक्षण भी तो एक गुण है अतः ओ३म् भी गौण नाम सिद्ध हुआ फिर इसे निज नाम कैसे कहते हो ?

उत्तर—यजुर्वेद अ ४० मंत्र १७ में 'ओ३म् खं ब्रह्म' अर्थात् जो आकाश के समान व्यापक महान ब्रह्म परमेश्वर है उसका नाम 'ओ३म् है, ऐसा लिखा है। इससे परमेश्वर का मुख्य नाम ओ३म् वेदानुकूल सिद्ध है। इसके अ+उ+म इन अक्षरों में परमेश्वर के जितने भी नाम हो सकते हैं वे सभी इसके अन्तर्गत आ जाते हैं। विपक्षी गौण शब्द का अर्थ भी नहीं जानता है। हमें उसकी कम अक्ली पर तरस आता है। श्रीधर भाषा कोष पृ, १८९ पर गौण शब्द का अर्थ दिया है="(वि) अमुख्य, जो ठीक नहीं।" इसका तात्पर्य यह हुआ कि परमेश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है और शेष सारे नाम जो इसके गुण तथा कर्मों की अपेक्षा के निश्चित किये जा सकते हैं वे सभी गौण अर्थात् अमुख्य (जो मुख्य न हों) हैं। विपक्षी को शब्दार्थ का ज्ञान कोष से कर लेना चाहिये था यदि उसे हिन्दी भाषा भी आती होती तो ऐसे ऊटपटांग प्रश्न न करने पड़ते। सत्यार्थ प्रकाश का लेख सत्य है। यजु २/१३ में भी परमेश्वर का मुख्य नाम' ओ३म् प्रतिष्ठ' कह कर 'ओ३म्' बताया है।

प्रश्न १४—में लिखा है कि—(परमात्मा) सब जगत को बनाने से ब्रह्मा, है। पृष्ट ६ पर लिखा हैं वह परमात्मा उत्पत्ति आदि व्यवहारों से पथक है.... परस्पर विरुद्ध है।

उत्तर—सत्यार्थप्रकाश पढ़े लिखे लोगों के समझने की चीज है, बे पढ़े लिखे उसे नहीं समझ सकते हैं। स्वामी जी ने ठीक ही लिखा है कि जगत की

रचना करने वाला होने से परमेश्वर को ब्रह्मा कहते हैं। वह परमेश्वर स्वयं कभी जन्म नहीं लेता है क्योंकि वह अनादि सत्ता है। अतः उसकी उत्पत्ति नहीं होती है इसलिये लिखा है कि 'वह उत्पत्ति आदि व्यवहारों से पृथक है, इस साधारण सी बात को भी जो न समझ सके तो ऐसे कुपढ़ अज्ञानी को कौन पढ़ा लिखा तथा शास्त्री मानेगा ?

हां निज पुत्रीगामी, सती अनसुइया से बलात्कार करने वाला (भविष्य पुराण) जिससे राक्षसों ने पुंम मैथुन किया हो। (भागवत पुराण) लम्बी दाढ़ी वाला, चार मुंह वाला, विष्णु की नाभि से जो पैदा हुआ हो वह विष्णु का बेटा पौराणिक आपका फर्जी ब्रह्मा अवश्य पैदा होने व मरने वाला है। सत्यार्थ प्रकाश का ब्रह्मा पौराणिक ब्रह्मा से भिन्न है, यह बात आप सदैव याद रखा करें। आया ख्याले शरीफ में या नहीं ?

प्रश्न १५—सं प्र० पृ० ११ लिखा है 'परश्चासावात्मा च'' पर-मात्मा'। पर और आत्मा शब्दों की सन्धि करने पर परात्मा बनेगा न कि परमात्मा ?

उत्तर—इस प्रश्न पर तुम अपनी शंका समाधान दो प्रकार से करसकते हो प्रथम तो यह आप प्रयोग है। अतः सत्य है। यह तुम्हारी समझ के बाहर की बात है। दूसरे-तुम यदि इसे प्रेस की अशुद्धि मानते हो जैसा कि तुमने स्वयं अपने गन्दे ट्रैक्ट शल्यो जेष्यति पाण्डवान' में पृ० ३८ पर पंक्ति ३ व ४ में स्वीकार लिया है 'परन्तु सत्यार्थ प्रकाश के तीसवें संस्करण तक यह अशुद्धि ज्यों की त्यों छाती आरही है।' तो भी तुमको प्रश्न करने का अधिकार नहीं था। प्रेस की गलतियां तो तुम्हारे यहां के घासलेटी साहित्य में हजारों भरी पड़ी होती हैं। तब क्या हम तुम्हारी किताबों में छपी अशुद्धियों को देख कर यह घोषित करदें कि तुम सब बिलकुल कुपढ़्डे हो, और तुम्हें हिन्दी लिखना भी सही नहीं आता है ? प्रश्न सोच समझ कर किया करो तो ठीक होगा। इस प्रश्न से तो तुम्हारी नादानी ही प्रगट होती है, न कि पाण्डित्य।

प्र० १६-सं प्र० पृ० १४ में लिखा है कि परमात्मा का नाम नारायण है। सो ओ३म् के निज नाम होने में कोई प्रमाण नहीं है क्योंकि

स्वीकारार्थक अव्यय भी ओ३म् है। वस्तुत परमात्मा का निज नाम नारायण है। जिसके निजत्व में पूर्व पदात्संज्ञायामग (अष्टा०) यहंणत्व' विधायक सूत्र विद्यमान है।

उत्तर—परमेश्वर का निज मुख्य काम 'ओ३म्' यजुर्वेद ४०/१७ में 'ओ३म् खंब्रह्म' तथा यजु २/१३ में 'ओ३म् प्रतिष्ठ' योग दर्शन में 'तस्यवाचकः प्रणवः' यजु० ४०/१५ में ओ३म् क्रतोस्मरः इत्यादि अनेक प्रमाणों से सिद्ध है। नारायण शब्द भी परमेश्वर का वाचक सिद्ध किया जा सकता है जैसा कि सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है।

परन्तु पौराणिक साहित्य में परमात्मा का नहीं वरन् चार हाथों वाले विष्णु का नाम नारायण बताया है क्योंकि वह क्षीर सागर में जल में निवास करता है। नार=जल, अयन=स्थान, अर्थात् जल में रहने वाले कछुआ, मछली, केकड़े मगरमच्छ आदि जीव जन्तु भी आप के अर्थ में पक्के नारायण बन जावेंगे। तुम्हारे अल्हड़ सम्प्रदाय का परमेश्वर पर तो विश्वास है नहीं, मगरमच्छों को नारायण मान कर पूजते व मछली को खाते हो तुम तो नारायण भक्षी हो, न कि नारायण के भक्त हो। परमेश्वर का मुख्य नाम ओ३म् ही है जो शास्त्र सम्मत है।

प्र० १७—सं० प्र० पृ० १५ में लिखा है कि यः शनैश्चरति स शनैश्चरः" परमेश्वर का नाम शनैश्चर है। चर धातु गमन और भक्षणार्थक है तदनुसार धीरे-धीरे चलने वाला या खाने वाला इसका अर्थ होगा। इससे सिद्ध है कि दयानन्दियों का कल्पित परमात्मा पंगु किंवा मुख रोगी है?

उत्तर—आपने उदाहरण अधूरा पेश किया है। स प्र० का पूरा लेख निम्न प्रकार है—

"चर गति भक्षणयोः' इस धातु से शनैस' अव्यय उपपद होने से शनैश्चर शब्द सिद्ध हुआ है। 'यः' शनैश्चरति स शनैश्चरः" जो सबमें सहज से प्राप्त धैर्यवान है, इससे उस परमेश्वर का नाम शनैश्चर है।"

इसमें गति शब्द का अर्थ 'गति प्रापणयोः' अर्थात् गति शब्द द्विअर्थक है।

गति चलना' और प्राप्त करना। स्वामी जी शनैः के साथ चर शब्द का प्रयोग होने से धीरे अर्थात् सहज में ही प्राप्त होने वाला होने से ही परमात्मा को 'शनैश्चर' कहते हैं। यह ईश्वर का नाम इस प्रकार ठीक सिद्ध है। विपक्षी का आक्षेप उसके सं कृत ज्ञान शू य होने से हुआ है। ईश्वर सहज प्राप्त होने से सर्वान्तिर्यामी घट-घट वासी कहा जाता है।

प्रश्न १८—स० प्र० पृ० १८ पर लिखा है 'निर्गत आकारात् सनिराकारः' इसका सीधा अर्थ ही होगा जो आकार से निर्गत हो, वह निराकार है। इससे सिद्ध है कि परमात्मा सृष्टि रचना से पूर्व साकार होता है। तभी तो आकार से प्रथक होना सम्भव हो सकता है। निराकार शब्द ही उसके साकारत्व का प्रमाण है।

उत्तर—अ पका अर्थ गलत है तथा स्वामी जी की व्याख्या ठीक है। निः=निश्चय पूर्वक, गत=रहित, विना। निर्गत=प्रथक, आकारात=आकार से। अर्थात् क्योंकि परमात्मा निश्चय पूर्वक आकार से प्रथक वा रहित है अतः वह निराकार है। जिसका कोई आकार न हो वह निराकार होता है। एकदेशीय पञ्च भौतिक पदार्थ ही साकार होते हैं। सर्वव्यापक ब्रह्म की सत्ता निराकार ही हो सकती है। अनन्त विश्व में व्याप्त अनन्त ब्रह्म निराकार ही है। कभी साकार व कभी निराकार होने वाली सत्ता होने से परमात्मा विकारी होगा और नाशवान हो जावेगा। परिणमन जड़ प्रकृति का गुण है न कि नित्य निर्विकार ब्रह्म का। आपका प्रश्न मिथ्या है। परमात्मा नित्य एकरस अपरिणामी सत्ता है। यदि कोई कहे कि विपक्षी सदाचार से सर्वथा प्रथक है, तो उसका अर्थ यही होगा कि आप पक्के दुराचारी हैं। यह नहीं होगा कि आप कभी सदाचारी भी थे।

प्र० १६—स० प्र० पृ० १६ में लिखा है कि 'परमेश्वर का नाम सरस्वती है' स्वामी दयानन्द अपने साथ सरस्वती लगाते हैं तो क्या वे परमेश्वर हैं? गिरि-पुरी, भारती, सरस्वती आदि पौराणिक सम्प्रदायाभिमत नामों का उन्होंने खण्डन किया है। फिर यह कौन सी देवी हैं जिसे कलियुगी सन्यासी प्यार करते हैं।

उत्तर—स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती ने स्वामी जी को जब सन्यास दिया था तो उनका नाम दयानन्द सरस्वती रखा था। यह गुरु का प्रदत्त नाम इनका था। नाम स्वयं नहीं रखे जाते हैं वे गुरु के द्वारा दिये जाते हैं। सरस्वती विद्वान सन्यासी वर्ग की उपाधि है जिसे अनेक पौराणिक मूढ़ साधु अपने नाम के पीछे लगाकर अपने को विद्वान सावित करने का पाखण्ड रचते देखे जाते हैं। सरस्वती शब्द ईश्वर का वाचक है तो इससे आक्षेप कैसे बन गया? पन्चानन महादेव के अर्थ में आता है तो तुम अपने को पन्चानन लिखकर सड़ातनियों के खुदा शिव जी क्यों बने फिरते हो? दीगरे नसीहत खुदराफजीहत इसे ही तो कहते है।

जैसे प्राचीन काल में गौड़पदाचार्य शंकराचार्य आदि विद्वान प्रसिद्ध थे। वैसे ही दयानन्द सरस्वती नाम ऋषिदयानन्द जी महाराज का था। जैसे आचार्यों की नकल करके अविद्वान लोग बे पढ़ लिखे तुम्हारी तरह माधवाचार्य, प्रेमाचार्य वीराचार्य, श्री लण्ठाचार्य आदि बन बैठे हैं। उसी तरह तुम्हारे साधू दयानन्द सरस्वती की नकल करने लग पड़े हैं।

पौराणिकों की उपाधियां तो गिरि (पहाड़ी), पुरी (पूड़ी कचोड़ी उड़ाने वाले शहरी), भारती (भारत में विना टिकिट चक्कर काटने मांगने खाने वाले) आदि ही हैं। ये उनके गुणों व विद्वता की परिचायक नहीं है। स्वामीदयानन्द जी ने सरस्वती' शब्द का खन्डन सत्यार्थ प्रकाश में कहीं भी नहीं किया है। आपको झूठ बात लिखने में लज्जा आनी चाहिये थी।

आप शायद 'सरस्वती' शब्द से ब्रह्मा की व्यभिचारिणी पुत्री को ग्रहण कर बैठे हैं जिसने ब्रह्मा जी (निज पिता) से दिव्य सहस्र वर्ष तक संभोग कराके पुत्र को जन्म दिया था और जिससे हर समझदार व्यक्ति घृणा करता है। बलिहारी है आपकी अकल की।

प्रश्न—२० स० प्र० पृ० १६ में लिखा है जो अपना कार्य करने में किसी अन्य की सहायता की इच्छा नहीं करता—उस परमात्मा का

नाम सर्व शक्तिमान है। आगे अष्टम समुल्लास में लिखा है 'प्रकृति सृष्टि का उपादान कारण है. अर्थात् उसके सहयोग से ही परमात्मा सष्टि बनाता है. क्या यह परस्पर विरोध भंगभवानी का चमत्कार तो नहीं है?

उत्तर—विपक्षी नेत्र हीन है अथवा अफीम की पिनक में उसे स० प्र० का पूरा लेख नहीं दिखाई दिया है। वह इस प्रकार है। "सर्वा: शक्तयो विद्यन्ते यस्मिन् स सर्व शक्तिमानीश्वर:" जो अपने कार्य करने में किसी अन्य की सहायता की इच्छा नहीं करता, अपने ही सामर्थ्य से अपने सब काम पूरे करता है इसलिए उसे परमात्मा का नाम 'सर्वशक्तिमान' है।

इसका स्पष्ट अर्थ है कि परमेश्वर में अपना कार्य करने की सम्पूर्ण शक्ति विद्यमान है। उसे किसी भी "शक्ति" की सहायता की आवश्यकता नहीं होती है। सम्पूर्ण शक्तियां परमेश्वर में विद्यमान हैं। वहां 'शक्ति' शब्द आया है, न कि जड़ 'पदार्थ' शब्द है। जड़ प्रकृति का परमात्मा स्वामी है, उसमें व्याप्त है। जड़ प्रकृति जगत का उपादान कारण है। उसमें कोई शक्ति नहीं है जोकि परमेश्वर को सहायता दे सके। अत: सत्यार्थप्रकाश के दोनों स्थलों के लेख ठीक हैं। अल्पबुद्धि विपक्षी उसे समझ नहीं पाता है, तो ग्रन्थ कर्ता का दोष नहीं है।

प्रश्न २१—स० प्र० पृ० २० में लिखा है कि "सजातीय विजातीय स्वगत भेद शून्य ब्रह्म"। जब तुम प्रकृति और जीव को भी अनादि और अनन्त मानते हो तब वह ईश्वर स्वगत भेद शून्य कैसे होगा? यदि प्रकृति और जीव को ईश्वरानपेक्ष्य सत्ता सम्पन्न मानोगे तो तुम्हारे मत में ये तीनों समान परतत्व सिद्ध होंगे। सर्वोपरि ईश्वर का अभाव हो जायगा।

उत्तर—मान लो तुम्हारा विवाह हो जावे और तुम्हारी कुल परम्परा के अनुसार नियोग से एक बच्चा तुम्हरा नाम चलाने को पैदा हो जावे। तो वह बच्चा, तुम और तुम्हारे पिता जी यह तीनों ही जीवित होने की दृष्टि से समान हुए किन्तु आयु, विद्या, बल, शरीर की

स्थूलता तथा भार आदि की दृष्टि से तीनों में महान अन्तर रहेगा। तुम्हारे पिता जो मुटापा व भारी पन की दृष्टि से बाजी मारले जावेंगे।

इसी प्रकार से ईश्वर-जीव तथा प्रकृति तीनों अनादि सत्तायें होने से नित्यत्व की दृष्टि से समान होने से 'सत्' है। किन्तु जीवात्मा एक-देशीय अणुमात्र चैतन्य सत्ता है। प्रकृति जड़ नित्य सत्ता है। परमात्मा सत, चित्त तथा आनन्द स्वरूप सर्वोपरि सर्वव्यापक सर्वाधिष्ठात्री सत्ता है इस दृष्टि से तीनों में विभेद है और ब्रह्म का सर्वोपरिपन सुरक्षित रहता है। आशा है समाधान हो गया होगा। प्रश्न सोच समझ कर किया करो। क्या बच्चों के से प्रश्न करते हो?

प्रश्न २२—स० प्र० पृ० २२ में लिखा है कि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण कर्म स्वभाव हैं वैसे उसके अनन्त नाम भी हैं। उनमें से प्रत्येक गुण कर्म और स्वभाव का एक एक नाम है, इससे सिद्ध है कि परमात्मा के सभी नाम सगुण हैं, यहां तक कि उसका 'निर्गुण' नाम भी आपाततः गुण रहितता रूप गुण होने का ही सूचक है।

उत्तर—इसमें आपने प्रश्न क्या किया, यह नही बताया तो उत्तर किस बात का दिया जावे।

प्रश्न २३—स० प्र० (द्वितीय समुल्लास) पृ० २५ में लिखा है कि धन्य है वह माता जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करें-क्या गर्भस्थ रज वीर्य के कीटाणुओं को और इन्द्रिय विकल अबोध बालक को उपदेश देना संभव है? है न भंगड़ की बहक।

उत्तर—यह प्रश्न तुम को प्रेमाचार्य के बजाय पूरा मूर्खाचार्य साबित करता है। गर्भाधान के समय के माता पिता के विचारों का गर्भस्थ शिशु पर माता के विचारों तथा उसके आहार—विहार आदि का बुरा प्रभाव पड़ता है। सन्तान शास्त्र पढ़कर देखो। तुमतो साक्षात हिजड़े हो। अन्यथा यदि औलाद पैदा की होती तो यह रहस्य भी जान लेते। शिशु पर वातावरण का प्रभाव पड़ता है, उससे भी वह शिक्षा लेता

है। गर्भाधान से लेकर प्रसवोपरान्त बड़े होने तक धीरे २ सद्विचारों की शिक्षा बालक को देने की व्यवस्था सर्वथा ठीक है गृहस्थ लोग इसे जानते हैं, हिजड़े क्या समझें। क्या गर्भावस्था में अभिमन्यु द्वारा चक्र-व्यूह तोड़ने की शिक्षा प्राप्त करने की बात भूल गये या उस पर विश्वास नहीं रहा है ?

प्रश्न २४—पृ० २५ में लिखा है कि एकादशी और त्रयोदशी को छोड़कर बाकी १ रात्रि में गर्भाधान करना उत्तम है। यह कौन वेद की आज्ञा है। क्या एकादशी और त्रयोदशी रात्रि में कोई प्रत्यक्ष हानि दिखा सकते हो ? कहिये यहां फलित ज्योतिष को मानकर स्वामी जी ने अपने गाल पर तमाचा लगाया या नहीं ?

उत्तर—आंखों के अन्धे नाम नैनसुख। बनता है शस्त्रार्थ दशानन शास्त्री और आता नहीं है संस्कृत का एक अक्षर भी यह मूढ़ मगज गर्भाधान की ग्यारहवीं व तेरहवीं रात्रि या जिनको संस्कृत में एकादशी व त्रयोदशी रात्रि कहा जाता है, अपनी व्रत की पौराणिक रात्रियां समझ बैठा है और उन पर ज्योतिष खोल बैठा है। गर्भाधान के लिए मासिक धर्म के चौथे दिन के बाद किन २ रात्रियों में स्त्री के साथ संयुक्त होने से पुत्र तथा विषम में कन्या होती है, किन २ रात्रियों में रजोदर्शन के बाद से गर्भाधान निषिद्ध है। यह आयुर्वेद तथा सन्तान शास्त्र में पढ़ के विपक्षी देख सकेगा। पर उसको इस विज्ञान से क्या मतलब है। उसे तो प्रश्न करके अपनी मूर्खता दिखानी थी। अब वह समझ सकेगा कि स्वामी जी ने इस जैसे मूर्ख पौराणिक पंडितों के मुंह पर कितना कस के तमाचा लगाया है कि वे उनकी छोटी से छोटी बात को भी समझने में असमर्थ रहते हैं।

प्रश्न २५-स० प्र० पृ० २६ में लिखा है कि प्रसूता का दूध छः दिन तक बालक को पिलावें, पश्चात् धायी पिलाया करे प्रसूता स्त्री दूध न पिलाये। यह किस वेद की आज्ञा है ?

प्रश्न २६—स० प्र० पृ० २६ में लिखा है दूध रोकने के लिये स्तन

के छिद्र पर उस औषधि का लेप करें जिससे दूध स्रवित न हो, ऐसा करने से दूसरे महीने पुनरपियुवति ही जाती है। यह किस वेद में लिखा है।

प्रश्न २७—स० प्र० पृ० २१ में लिखा है स्त्री योनि का संकोचन और शोधन और पुरुष वीर्य का स्तम्भन करें। यह किस वेद में लिखा है?

उत्तर—इन तीनों प्रश्नों का हम मुँह तोड़ उत्तर विपक्षी को माधवाचार्य को डबल उत्तर' पुस्तक में दे चुके हैं। उत्तर मिल जाने पर भी बार बार वही प्रश्न करते जाना विपक्षी की धूर्तता नहीं तो और क्या है।

प्र० २८ स० प्र० पृ० २७ में लिखा है कि उपस्थेन्द्रिय के स्पर्श और मर्दन से हस्त में दुर्गन्ध भी होता है। लिंग स्पर्श से हाथ में दुर्गन्ध भी होता है. यह बात स्वामी जी ने वेद के किसी मन्त्रानुसार लिखी है या अपने निजी अनुभव के आधार पर। कहिये कासगंजी जी! आपकी क्या राय है?

उत्तर—उपस्थेन्द्रिय के स्पर्श व मर्दन से हाथों में दुर्गन्ध होती है, यह सभी जानते हैं। पर विपक्षी फिर भी हम से उत्तर चाहता है तो उत्तर सुनले। यदि निम्न उत्तर से उसका पूरा समाधान नहीं होगा। तो हम उसे प्रमाण भी बतादेंगे। पहिले वह निम्न प्रकार से परीक्षा कर के देख लें।

(क) विपक्षी ने अपने 'लोकालोक' अखबार के 'शंका समाधानाङ्क' में पृ० ४७ पर पंक्ति २ में हस्त मैथुन करने की विकालत की है। वह स्वयं भी यह कुकर्म करता ही होगा। तो चाहे जब भी हस्त मैथुन के बाद अपने हाथ को सूँघ कर देखले कि उसमें बदबू आती है या खुशबू।

(ख) मूत्रेन्द्रिय तथा गुदेन्द्रिय दोनों मल निकलने के मार्ग हैं। विपक्षी अपना गुदा में अंगुली डाल कर फिर उसे नाक में घुसेड़ कर सूँघ कर

देखे कि खुशबू आती है या बदबू । वह चाहे तो उसे चख कर स्वाद भी जान सकेगा ।

(ग) आगे के प्रश्न २९ में उसने लिखा है कि वह मृतकों की आत्माओं को बुला कर बातें करा सकता है । दीर्घतमा ऋषि के लिंग को मुंह में देकर चाटने व चूसने वाली सुदेषणा रानी की रूह को बुला कर पूछ ले कि उसका स्वाद कैसा होता है और उसमें सुगन्धि आती है या बदबू ।

(घ) सूर्य ने अपनी भतीजी संज्ञादेवी के मुंह में मैथुन कर के तथा 'उसे' नाक में घुमेड़ कर वीर्यदान किया था (यह भविष्य पुराण में लिखा है) । तो विपक्षी संज्ञादेवी की रूह को बुला कर उससे पूछ ले कि उसका स्वाद कैसा था तथा नाक में अन्दर जाने पर उसमें गन्ध कैसी आ रही थी ?

(ङ) शिवजी के लिंग को विष्णु आदि देवताओं ने सूंघा, चूसा व वीर्यपान किया था और सभी को गर्भ रह गये थे (सौरपुराण) तो विपक्षी विष्णु जी से पूछले लिंग में बदबू आरही थी या खुशबू उड़ रही थी । यह भी पूछ ले कि उसका' तथा वीर्य का जायका कैसा लगा था ?

(च) आपके व्यासावतार ने लिखा है "निज शुक्रं गृहीत्वा तु वाम हस्तेन यः पुमान् । कामिनी चरणं वामं लिपेत्स स्यात् स्त्रियः प्रियः ।" (गरुड़ पुराण) । तो व्यासजी की रूह को बुलाकर उससे पूछ लेना कि हस्त मैथुन द्वारा निज वीर्य निकाल कर जब उन्होंने इस विलक्षण नुस्खे का स्वानुभव किया था तो अपने हाथ में उनको खुशबू आ रही थी या बदबू उड़ रही थी ।

(छ) शिवजी जब दारुवन में व्यभिचार करने गये थे तो निज लिंग हाथ में पकड़े मसल रहे थे । तथा अत्रि की पत्नी अनुसूया से व्यभिचार करने गये थे तब भी उसे हाथ में पकड़े हुए गये थे । 'हस्ते लिङ्गं विधारयन्' (शिव पुराण) तथा "लिङ्गं हस्तः स्वयं रुद्रो विष्णुस्तद्रस

वर्धनः'' (भविष्य पुराण) के प्रमाण इस में साक्षी हैं। तो विपक्षी शिवजी को बुला कर पूछ ले कि निज लिंग को पकड़ने व उसका मर्दन करने पर उनके हाथों में खुशबू आ रही थी या बदबू पैदा हुई थी।

(ज) हमारी नेक राय है कि हमारा विपक्षी खूबसूरत नौजवान प्रेमाचार्य किसी भी पौराणिक युवा पंडित के उद्धृत लिंग को अपने गुद-गुदे कोमल हाथों से मर्दन करके अपने हाथों को सूंघ कर स्वयं अनुभव करले कि उसके स्पर्श करने से हाथों में दुर्गन्धि आवेगी या सुगन्धि मिलेगी। यदि इस सरल परीक्षण में उसे खुशबू नजर आवे तब वह सत्यार्थ प्रकाश की बात पर ऐतराज करके हमसे पुनः उत्तर ले सकेगा।

हमने यह इस लिये लिखा है कि माधव परिवार में सभी छोकड़े लिंग हीन बिलकुल जनखे ही सदा पैदा होते हैं, यह प्रसिद्ध बात है उनके उपस्थेन्द्रिय तो होती ही नहीं है। यदि होती तो ऐसी मूर्खतापूर्ण शंकायें विपक्षी को पेश न करनी पड़तीं। इस कुल में वंश चलाने को नियोग की क्रिया व्यवहार में चालू रखी जाती है यह बात अनेक दिल्ली वासी जानते हैं। इसलिए ये विचारे यह भी नहीं जानते कि मर्द का वह कैसा होता है और उसे छूने से हाथ में बदबू आती है या खुशबू।

प्रश्न २९—स० प्र० पृ० २७ में लिखा है। 'भूत प्रेत आदि मिथ्या हैं...सभी वेदों में खास कर अथर्ववेद में भूत प्रेत योनियों को सिद्ध करने वाले सूक्त के सूक्त भरे पड़े हैं। अथर्ववेद का १२ वां काण्ड पढ़कर देख लो। हम भूत बने स्वामी जी की आत्मा को बुला कर बात करा सकते हैं।

उत्तर—भूत प्रेत कोई योनि नहीं हैं। विपक्षी का दावा मिथ्या है। अथर्ववेद में भूत प्रेतों को बताने वाला न कोई मंत्र है और न काण्ड है। विपक्षी चतुर्वेद भाष्यकार श्री पं० जयदेव शर्मा कृत अथर्ववेद भाष्य पढ़कर अपना अज्ञान दूर कर सकता है। स्वामी दयानन्द जी की आत्मा को विपक्षी विचारा क्या बुला सकेगा, गाल बजाना जानता है। यदि वह भूत प्रेतों को बुला सकता है तो हमारे ऊपर के उत्तर नं० २८ में वर्णित सुदेष्णा रानी,

विष्णु, शिव, व्यासादि की रूहों को बुला कर लिंग की वदबू व आयका पूंछ कर बतावें। पोल खुल जावेगी। साहस हो तो चुनोती स्वीकार करें। कूर्म पुराणानुसार दारुवन में व्यभिचार करने पर शिवजी पर लात घूंसे, डन्डों की भारी मार पड़ी थी, तो शिवजी की रूह को बुला कर पूंछना कि उनके चोट कितनी आई थी तथा उनका कटा हुआ लिंग अभी तक किसी ने जोड़ा या नहीं अथवा व लिंग हीन बना फिरता है ?

प्रश्न ३- स० प्र० पृ० २७ में लिखा है कि "दाह करने वाला शिष्य (प्रेतहार) अर्थात् मृतक को उठाने वाले के साथ दशवें दिन तक अशुद्ध रहता है " मरने और जन्मने पर अशौच होता है। क्या दयानन्दी वेद में ऐसा प्रमाण दिखा सकते हैं ? दस दिन तक अशुद्ध रहता है यह किसी यन्त्र द्वारा प्रत्यक्ष दिखाया जा सकता है क्या ? यदि नहीं तो फिर धर्म के अदृष्ट अनुष्ठानों को तुम और तुम्हारे दादा गुरु 'पोपलीला' किस मुंह से कहा करते हैं ?

उत्तर—स० प्र० समुल्लास २ में मनुस्मृति अ ५ श्लोक ६१ दिया है जिसकी दूसरी पंक्ति में प्रेतहारैः सम तत्र देश रात्रेण शुध्यति' का अर्थ स्वामी जी ने दिया है जिस पर आपको आपत्ति है। श्लोक में 'दशरात्रेण' पद है अर्थात् मृतक को उठाने वाला व दाह करने वाला दस रात्रियों में शुद्ध हो पाता है। यह आयुर्वेद का विषय है। विपक्षी इस विषय में खाक भी नहीं समझ सकता है मुर्दे की देह (शव) से जो दुर्गन्धि निकलती है उसका प्रभाव शव स्पर्श करने वालों के शरीर पर होता है। किसी के शरीर में जख्म हो और शव की वायु का स्पर्श हो जावे तो घाव बिगड़ जाते हैं, यह सभी लोग जानते व प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। इसी प्रकार शव के स्पर्श से दूषित वायु का मुर्दे को उठाने वालों (प्रेत हारैः) के शरीरों पर जो खराब प्रभाव होता है उसको धीरे २ शरीर में से निकलने में दस रात्रियों का समय लग जाता है जैसे किसी बालक की दृष्टि दोश का रोग लग जाने पर लाल मिर्च को हाथ में लेकर बालक के मस्तक

पर १०।२० बार घुमाने से शरीर के रोगांश को मिर्च आकर्षित कर लेती है तथा मिर्च के प्रभाव को शरीर आकर्षित कर लेता है और अग्नि में मिर्च डालने पर कोई गन्ध नहीं आती है किन्तु रोग दूर होने पर आने लगती है, तथा जैसे मलीन वस्त्र पहिनने पर शरीर मलीनता को आकर्षित करने से अस्वस्थ बन जाता है, स्वच्छ वस्त्र पहिनने पर शरीर स्फूर्ति अनुभव करता है, वैसे ही मृतक की गन्दी वायु के गन्दे तत्वों का जो आकर्षण वायु में से प्रेत स्पर्श करने वालों के शरीर कर लेते हैं वह गन्दगी रात को सोने में शरीर से धीरे २ निकलती रहती है और दस रात्रियों में लोग पूर्ण स्वस्थ हो पाते हैं मनु महाराजा की उक्त वैज्ञानिक बात को ऋषि दयानन्द जी ने ठीक समझ कर उसका प्रमाण दिया था। पर विद्या में कोरा ढपोलशंख विपक्षी इन बातों को क्या समझे। झूठी नकल करके या मोल खरीदी हुई डिग्रियां नाम के सामने लगाने से कोई विद्वान नहीं बन सकता है। पौरा-णिक पोपलीलायें तो स्पष्ट पाखण्ड है जो धर्म के नाम पर आप लोगों ने फैला रखी है। आपका सारा मत तथा धन्धा ही पोपडम पर आधा-रित है।

प्रश्न ३१ स० प्र० पृ० २८ में लिखा है 'शरीर का दाह हो चुका तब उसका नाम भूत है, तो जो चेतन आत्मा पुनर्जन्म से पूर्व रहता है उसका क्या नाम है ?

उत्तर—नाम रूप वाले स्थूल शरीर नष्ट हो जाने पर सम्पूर्ण जीवा-त्माओं को जीवात्मा ही कहते हैं। निराकार जीवात्माओं के कोई नाम नहीं होते हैं न उसकी कोई शक्ल सूरत आकर एवं रंग आदि होते हैं।

प्र० ३२ स० प्र० पृ० २९ में लिखा है कि 'क्या ये (सूर्यादि ग्रह) चेतन हैं जो क्रोधित हो के दुःख और शान्त हो के सुख देंगे'—'शन्नो-ग्रहाश्चन्द्रमसा' (अथर्व १९।९।१०)आदि वेद मन्त्रों में ग्रहों को सम्बो-धन करके उनसे कल्याण की प्रार्थना की गई है इत्यादि ..।

उत्तर—स्वामी जी का लेख ठीक है। सूर्य चन्द्रमा आदि लोक जड़

होने से किसी की प्रार्थना स्तुति नहीं सुन सकते हैं। और न प्रार्थना से किसी को दुःख सुख दे सकते हैं। विपक्षी तो सचमुच अज्ञानता में एम ए० ही है जो इतनी सी बात भी नही समझ पाता है। अथर्ववेद में कोई भी मन्त्र जड़ लोकों की उपासना का नहीं है। शन्नो ग्रहाश्चन्द्रमसा.' में ईश्वर प्रार्थना है न कि ग्रहों की स्तुति है। मन्त्र का अर्थ है कि हे परमेश्वर! चन्द्रमा, राहु, धूम्रकेतु आदि भौतिक लोकों का जो दैनिक प्रभाव हमारी पृथ्वी पर पड़ता है वह हम सबके लिये आपकी कृपा से कल्याणदायक हो वह हानिकारक न हो सूर्य चन्द्रादि का प्रकाश दि का प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है।

प्रश्न ३३- स० प्र० पृ० ३० में लिखा है कि अंक बीज, रेखा गणित विद्या है वह सब सच्ची जो फल लीला है वह सब झूठी है।" यदि फल लीला झूठी हैं तो स्वामीजी ने संस्कार विधि में सभी संस्कारों के लिये विशेष महूर्त क्यों लिखे हैं ?–म० कृष्ण प्रताप व वीर अर्जुन पत्रों में दैनिक राशिफल क्यों छापते हैं? समावर्तन संस्कार में बालक की माता द्वारा जल की भरी अंजलि चन्द्रार्घ देना क्यों लिखा है ?

उत्तर- फल लीला बिलकुल झूठी है, यह सत्य है। संस्कार विधि में संस्कारों के लिये कोई मुहूर्त छांटना नहीं लिखा है। जो समय घर वाले ठीक समझते हैं वही स्वयं निश्चित कर लेते हैं और वही उनका मुहूर्त होता है। न कि आपकी ढपोलशंखी पत्रा जी से मुहूर्त या समय छांटा जाता है। समावर्तन संस्कार में माता से चन्द्रार्घ दिलाने की बात नहीं है। झूठ बोलने व लिखने में आपको शर्म आनी चाहिये। सभी अखबार वाले पैसा कमाने को जो भी जो कुछ छपाता है तगडी रकम विज्ञापन शुल्क की लेकर विज्ञापन चाहे किसी का भी छापते हैं वे जानते हैं कि आज के बुद्धिवादी में कोई भी इन ढोंगी ज्योतिषियों के जाल में तो फंसेगा नहीं, तब इन से पैसा पैदा करने में क्यों चूका जावे।

प्रश्न ३४-स०प्र० पृ० ३१ पर लिखा है कि मारण मोहन उच्चाटन

वशीकरण आदि करना कहते हैं उनको भी महा पामर समझना।

अथर्ववेद के अनेक सूक्त उक्त चमत्कारों से भरे पड़े हैं। यह तथ्य विदेशीय अनुसंधायकों ने भी प्रगट किया है। अत: सवीरंदंग इत्यादि मन्त्र शत्रु मारणार्थक माने हैं। बोलो तुम वेद के पीछे चलना चाहते हो या वेद को अपने पीछे चलाना चाहते हो ?

उत्तर—सत्यार्थप्रकाश का लेख सत्य है। अथर्ववेद में मारण मोहन उच्चाटन जैसे विषयों का प्रतिपादक या समर्थक कोई मन्त्र नहीं है विदेशीय अंग्रेज लोग तो वेदों को भ्रष्ट करने वाले तुम्हारे पूर्वज सायण महीधरादि के अन्धानुगामी रहे हैं। आप चतुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार का अथर्ववेद भाष्य तथा निरुक्त पर निरुक्त सम्मर्श' स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज का भाष्य पढ कर वेद तथा निरुक्त का रहस्यार्थ समझ कर अपना अज्ञान मिटालेवें। हम वेदानुगामी हैं। आपकी तरह बुद्धि पर ताला लगा कर ढोंगी तान्त्रिकों के अन्धानुगामी नहीं हैं।

प्रश्न ३५—सं० प्र० पृ० ३१ में लिखा है कि विषयों की कथा, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन, सम्भाषण स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग प्रथक रहें।

सत्यार्थप्रकाश का चौथा समुल्लास नियोग जैसे महा गन्दे विषय की कथा से भरा है। रमाबाई जैसी दुराचारिणी स्त्री स्वामी जी के साथ रही। इत्यादि।

उत्तर—विष्टा के कीड़े को सुगन्धि में भी दुर्गन्धि नजर आती है। सत्यार्थप्रकाश का लेख कितना उत्तम है परन्तु इस लण्ठाचार्य को यह भी पसन्द नहीं आ रहा है। नियोग पर आक्षेपों का हम उत्तर तुमको और तुम्हारे पिता जी को "माधवाचार्य को डबल उत्तर" में दे चुके हैं, उस पर तुम सभी की बोलती बन्द हो चुकी है। इसी तरह विदुषी रमा बाई के आक्षेप का उत्तर तुमको हमारे मित्र पं० शिवपूजनसिंह जी कुशवाहा M. A. नीर क्षीर विवेक में दे चुके हैं। उस पर भी तुम्हारी

बोलती हैं। तब फिर वही बात बार २ क्यों पेश करते हो? क्या यह तुम्हारी धूर्त मनोवृति का सबूत नहीं है। और खरी २ सुनाना चाहो तो हम तुमको बताते हैं कि रमाबाई तुम्हारी खास दादी का उपनाम था। अपनी दादी की बदनामी करने में शरमाया करो। अभी तो तुम्हारे अब्बाजान श्री माधवाचार्य जी जिन्दा बैठे हैं। कहीं उनको अपनी माताजी की बदनामी सुन कर जोश आ गया तो बच्चू! इतने वे भाव के सर पर तड़ातड़ पड़ेंगे कि एक भी बाल न बचेगा। मिस्टर! लायक औलाद अपने बाप दादों की इज्जत की धूल सरे बाजार नहीं उड़ाती हैं। कुछ तो शर्म करो। बिलकुल वेहया ही बन बैठे हो।

प्रश्न ३६ सं० प्र० पृ० ३२ में लिखा है कि द्विज अपने सन्तानों का उपनयन करके आचार्य कुल में लड़के लड़कियों को भेज दें और शूद्रादि वर्ण उपनयन किये विना विद्या अभ्यास के लिये गुरुकुल में भेज दें।

इससे स्पष्ट है कि द्विज बालकों का ही यज्ञोपवीत होना चाहिये शूद्र बालक का नहीं! तथा द्विजों के बालक आचार्य कुलों में प्रविष्ट हों और शूद्र बालक गुरुकुल में। दयानन्दी बतायें कि वे सभी को यज्ञोपवीत किस प्रमाण से देते हैं?....तुम द्विज बालकों को गुरुकुल में क्यों भेजते हो? वह तो केवल शूद्रों के बालकों की शिक्षा संस्था है?

उत्तर—आर्य समाज शूद्रों को यज्ञोपवीत नहीं देता है। आपका आक्षेप व्यर्थ है। किन्तु पौराणिक मत सनातन धर्म शूद्रों को यज्ञोपवीत का अधिकारी मानता है। देखो प्रमाण—

कुश सूत्रं द्विजानां स्याद्राज्ञां कौशेय पट्टकम् ॥९॥
वैश्यानां चीरणं क्षौमं शूद्राणां शणवल्कजम्।

कार्पा संपद्मजं चैव सर्वेषां शस्त मीश्वर ॥१०॥
ब्राह्मण्यांकर्त्तितं सूत्रं त्रिगुणं त्रिगुणो कृतम्।

(गरुड़ पु० आ० का ४३)

अर्थात्—ब्राह्मणों का कुश का क्षत्रियों का रेशम का रेशम का, वैश्यों का सूत का और शूद्रों का सन का यज्ञोपवीत होना चाहिए हे राजन् ! अथवा सभी के लिये सूत का उचित है । जो ब्राह्मणी के हाथ का कता हुआ तीन वार तिहरा किया हुआ है ।

इससे सिद्ध है कि आप लोग स्वयं तो शूद्रों को जनेऊ देते हो और उल्टे आक्षेप हम पर करते हो । कामव्रत के बहाने रंडियों के मुंह से मुंह व नाक से नाक मिला कर उनका माल हजम कर जाते हो और भडुओं को जनेऊ देते हो तो शूद्रों से नफरत तुम्हें क्यों है ? राज्य व्यवस्था वैदिक न होने से प्रथक २ आचार्य कुल व गुरुकुल इसलिए नहीं चलाये जा सकते हैं कि अर्थ का प्रश्न सामने है, साथ ही शूद्र स्थिति के लोग निज बालकों को आश्रम प्रणाली से शिक्षा दिलाने को तैयार नहीं हैं क्योंकि उन पर राज्य का दबाव नहीं है । वैसे आचार्य तथा गुरु दोनों शब्द समानार्थक है, कोई भेद नहीं है । नाम भेद तो प्रथक २ संस्थायें खोलने के लिये हैं । पर आपको आक्षेप भारत सरकार से करना चाहिये जो कि स्कूल कालेजों में सभी वर्ग व मत के लड़कों व लड़कियों को साथ २ पढ़ा रही है । वहां जाकर आप शिक्षामंत्रालय पर क्यों नहीं रोते और हत्या देते है ?

प्रश्न ३७—स० प्र० पृ० ३३ में लिखा है कि 'माता पिता आचार्य अपने सन्तान और शिष्यों को सदा सत्य का उपदेश करें' क) सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है हिरण्याक्ष पृथ्वी को चटाई के समान लपेट कर सिरहाने रख कर सो गया। (ख) हिरण्यकश्यपु द्वारा प्रह्लाद को अग्नि में तपे लोहे के खम्बे पर चिपटने का आदेश देना उस पर चींटियां चलाना आदि भागवत में नहीं लिखा है जैसाकि लिखा गया है । हमने सवा सौ झूठों का संग्रह किया है इत्यादि

उत्तर—सत्य का उपदेश देना तुमको बुरा लगता हो तो तुम झूठ का उपदेश दिया करो । (क) सत्यार्थप्रकाश में जो पृथ्वी को लपेटने

व खम्बे पर चींटी चलने की बातें लिखी हैं वह वास्तव में भागवत आदि पुराणों की ही हैं। पर आप लोगों ने भागवत में से हमारे डरके मारे अब जान बूझ कर निकाल डली हैं। प्रमाण यह है कि भागवत स्क० १२ अ० १३ श्लोक ६७ में लिखा है कि भागवत में १८००० श्लोक हैं जबकि अब कटे छटे आपके भागवत में १४ ८० श्लोक ही केवल हैं। अर्थात् ३८२० श्लोक जिनमें ऐसी ही गप्पें भरी थीं आप लोगों ने उसमें से निकला डाले हैं। सत्यार्थप्रक शोक्त उक्त दोनों कथायें १८००० श्लोक वाले भागवत में में थीं आप पुरा भागवत पेश करें हम दोनों उपरोक्त गप्प कथायें उसमें दावे के साथ दिखा देंगे। सत्यार्थप्रकाश का लेख सर्वथा सत्य है। फिर भी नवलकिशोर प्रेस लखनऊ के सन् १८७० के छपे भागवत में खम्बे पर चींटी चलने तथा गरुड़ पुराण उत्तर ख० अ २६।३ में चटाई के समान पृथ्वी को हिरण्याक्ष के लपेटने की कथा आज भी विद्यमान देखी जा सकती है। यह दोनों कथायें आपके भागवत में भी ऋषि दयानन्द के काल में विद्यमान थीं। अप स्वयं महा गप्पी तथा झूठों के सरदार महा झूठे है। आपके पास झूठ और गप्पों का भडार न होगा तो और किस पर होगा।

प्रश्न ३८—स प्र० पृ० ३४ में लिखा है कि 'माँस आदि के सेवन से अलग रहो' परन्तु दयानन्दी (यजुर्वेद भाष्य ३५/१७) में लिखा कि बहु पशु का हवन करे और हुत शेष का भोक्ता बने इन परस्पर विरुद्ध उक्तियों का क्या समाधान है ?·······कासगंजी उत्तर दें।

उत्तर—मांस भक्षण पौराणिक पाप है वैदिक धर्म नहीं। अतः उससे बचने का उपदेश ठीक है। विष्णु पुराण अ० ३ ल० १६ में गाय काट कर श्राद्ध करने का विधान अ पके यहां वर्तमान ही है। पर आप को झूठ बोलने में शर्म क्यों नहीं आती है, हमें आश्चर्य है। स्वामी दयानन्द जी के यजुर्वेद भाष्य के अध्याय ३४ के मन्त्र १७ में कहीं भी वहु पशु का हवन करें और हुत शेष का भोक्ता बनें यह शब्द नहीं है।

यदि यजु० ३४।१७ में यह दिखा दें तो १०१) इनाम नगद प्राप्त करें। वरना आप महा झूठे सिद्ध हैं।

आप ने हमसे अपने ३८ प्रश्नों का उत्तर मांगा था जो जो दिया गया है। क्या आप में दम है कि आप या आपके भारत के सारे सनातनी पौराणिक पंडित मिल कर भी हमारी कई किस्तों के प्रश्नों का जवाब दे सकते हैं जोकि लगभग १७ वर्ष से भारत के पौराणिकों की खोपड़ी पर सवार हैं और जिनको पढ कर उन्हें नींद भी नहीं आती है ? अगर सही उत्तर उनके दे सकोगे तो १०१) इनाम मिलेंगे। किस्मत आजमाइये।

भविष्य में प्रश्न सभ्यता पूर्वक तथा पांडित्यपूर्ण करना सीख लो तो अच्छा होगा वरना हम उत्तर में तुम्हारे इस सड़ातन धर्म की धज्जियां उड़ा कर रख देंगे ? नोट करलो।

जनवरी सन् १९८५ से चालू — डा० श्रीराम आर्य प्रणीत ग्रन्थ

ग्रन्थ	मूल्य
बौद्धमत का भण्डाफोड़	३.००
हिन्दू मन्दिरों की लूट	१५.००
कुरान की छानबीन	१२.००
कुरान प्रकाश	७ ००
गीता विवेचन	७.००
भागवत समीक्षा	७.००
बाइबिल दर्पण	७ ५०
कुरान पर १७६ प्रश्न	३.००
असत्य पर सत्य की विजय	४.५०
मौलवी हार गया	२.५०
ईश्वर सिद्धि	५.००
वैदिक यज्ञ विज्ञान	३.५०
जैन मत समीक्षा	५ ००
मुनि समाज मुखमर्दन	४.५०
अवतार रहस्य	३.५०
मूर्ति पूजा खण्डन	४ ५०
टोंक क शास्त्रार्थ	३ २५
माता पुत्री का सम्वाद	३.५०
भारतीय शिष्टाचार	२ ५०
शिवलिंग पूजा क्यों ?	४.२५
अद्वैतवाद मीमांसा	३.००
प्रार्थना भजन भास्कर	३.५०
यजुर्वेद अ० ४० सव्याख्या	२.५०
यजुर्वेद अ० ३१ सव्याख्या	१.५०
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	२.००
पुराण किसने बनाये ?	३.००
माधवाचार्य को डबल उत्तर	२.२५
तुलसी और शालिगराम	.५०
दुर्गा पर नरबलि	.६०
कुरान और अन्य मजहब	.५०
स्वर्ग विवेचन	.५५
हनुमान जी बन्दर नहीं थे	.७०
कुरान खुदाई कैसे	.६५
शैतान का कहानी	.५०
कुरान में परस्पर विरोधी स्थल	.३०
खुदा का रोजनामचा	.३०
पौराणिक मुख चपेटिका	.५०
पौराणिक गप्प दीपिका	१.५०
इस्लाम दर्शन	१.५०
कबीर मत गर्वमर्दन	३.००
ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	१.००
स.प्र. की छीछालेदड़ का उत्तर	२ ००
महान पुरुष कैसे बनते हैं	३.२५
सव्याख्या विवाह पद्धति	३.००
इस्लाम में नारी की दुर्गति	१.२५
कुरान में पुर्नजन्म	.८०
कुरान में विज्ञान विरुद्ध स्थल	.८०
चोटी ३० पैसे, जनेऊ ६० पैसे	
कुरान के विचारणीय स्थल	२.००
पुराणों के कृष्ण	१.००
शिव जी के चार विलक्षण बेटे	१.००
मृतक श्राद्ध खण्डन	.७५
विभिन्न मतों में ईश्वर	.६५
गीता पर ४२ प्रश्न	.७५
शास्त्रार्थ के चेलेंज का उत्तर	.६०
पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है	.७५
बाइबिल पर सप्रमाण ३१ प्रश्न	.५०
अर्थ सहित वैदिक संध्या	.७५
सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था	.७५
नारी पर मजहबी अत्याचार	.५०
ईसामत का पोल खाता	.५०
नृसिंह अवतार वध	.३०
संसार के पौराणिकों से ३१ प्र.	.२५
अवतारवाद पर ३१ प्रश्न	.३०
ईसा मुक्तिदाता नहीं था	.३०
ईशा और मरियम	.३०
मूर्ति पूजा पर ३१ प्रश्न	.३०
ईसाई मत का पोलखाता	.३०
मृतक श्राद्ध पर २१ प्रश्न	.३०
तम्बाकू में विष,	.३०
अण्डा और मांस में विष	.३०

पता—वैदिक साहित्य प्रकाशन, कासगंज (एटा) उ० प्र० भारतवर्ष